संघ का
बदलता स्वरूप

शिक्षा की शान
नालंदा

कहानी
सिनेमाघर की

चित्तौड़ का किला
राजपूताना शान

शेफ
डिलिशियस कॅरियर

नई सोच, नया नज़रिया

न्यू इंडिया

मासिक, अप्रैल 2015 वर्ष 2, अंक 4 मूल्य 30/-

स्वैन स्वाइन फ्लू

RNI No. DELHIN/2014/56493 www.newindiamag.com www.facebook.com/NewIndiaMagazine

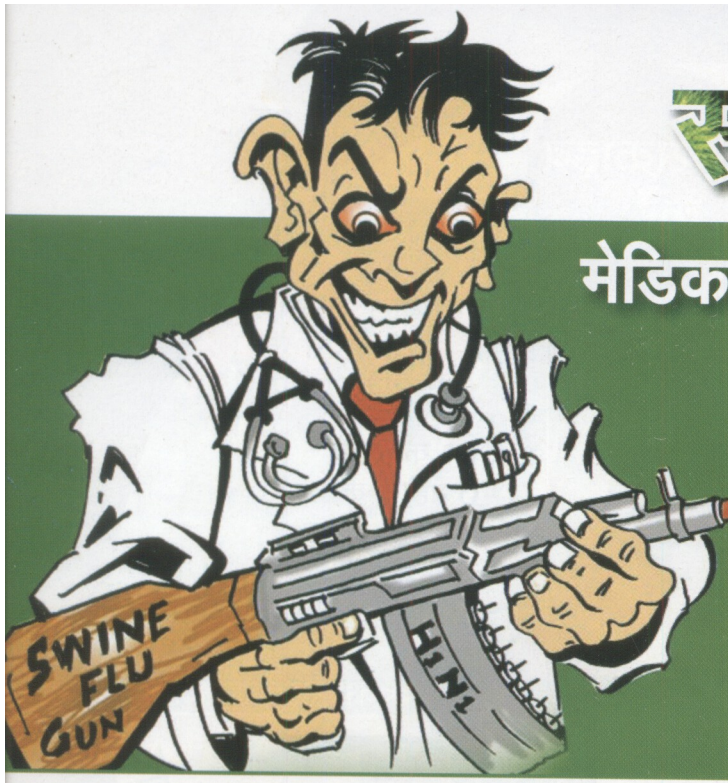

स्वाइन फ्लू स्कैम

मेडिकल वर्ल्ड का सब से बड़ा घोटाला

स्वाइन फ्लू को लेकर दुनिया भर में बड़ी हलचल है. ऐसे जताया जा रहा है मानो इससे बड़ी कोई दूसरी बीमारी ही न हो. अमेरिका की तमाम बड़ी ड्रग्स, केमिकल, रक्षा और मीडिया कारोबार से जुड़ी कंपनियों ने गठजोड़ कर दुनिया भर के प्रचार तंत्र पर कब्जा कर लिया है, और उनके द्वारा आए दिन ऐसा माहौल बनाया जा रहा है, मानो स्वाइन फ्लू से अब मरे तब मरे. आलम यह है कि दुनिया भर, खासकर तीसरी दुनिया के तमाम देशों की डरी-सहमी सरकारों ने बकायदा आदेश जारी कर अपने यहां के राज्य और जिला स्तर के प्रशासन को यह कहा है कि वह यह तय करें कि इलाके के हर बड़े अस्पताल और दवा की दुकानों पर इस बीमारी से जुड़ी दवा, इंजेक्शन, टीका और जांच के इंस्ट्रूमेंट हों. मतलब साफ है, सरकारें अपने नागरिकों की जान बचाने के लिए बिना किसी रिसर्च के अफवाह फैलाने वाली इन कंपनियों की व्यावसायिक महत्त्वाकांक्षा का शिकार हो रही हैं. दुर्भाग्य से अपना देश भारत भी ऐसे ही देशों में से एक है.

इसको समझने के लिए 'न्यू इंडिया' ने डॉ बिस्वरूप रॉय चौधरी, जो कि विश्व के जाने-माने डॉक्टर, साइंटिस्ट और इनवेस्टिगेटिव हेल्थ जर्नलिस्ट हैं, और जिन्होंने अपनी टीम के साथ मिलकर इबोला और स्वाइन फ्लू जैसी बीमारियों पर काफी रिसर्च किया है, की मदद ली है. यह पूरी रिपोर्ट डॉ बिस्वरूप रॉय चौधरी की देश-विदेश के डॉक्टर्स से हुई बातचीत, साइंटिस्ट्स और उनकी खुद की रिसर्च के आधार पर खुद उन्हीं के द्वारा तैयार की गई है.

डॉ बिस्वरूप रॉय चौधरी

कुछ साल पहले इन्फ्लूएंजा के मौसम में एक ड्रग कंपनी आगे बढ़ना चाहती थी. उसने साइंटिस्टों की मदद से एक आम वायरस के ही कुछ अलग से रूप तैयार कराए और उसे नाम दे दिया H1N1. उन्होंने इसे स्वाइन फ्लू का भी नाम दिया. यह ड्रग कंपनी WHO को प्रभावित कराकर इसे महामारी डिक्लेअर करवाने में सक्षम थी, जिससे सरकारों के लिए बाद में इस वायरस की उन्हीं के द्वारा बनाई गई दवा 'टेमिफ्लू' का स्टॉक करना मजबूरी हो जाए....और फाइनली इस कंपनी को 18 अरब डॉलर यानी लगभग साढ़े 11 सौ अरब रुपए का मुनाफा हो जाता है.

- डॉ बी एम हेगड़े

देश के सबसे बड़े सम्मानों में से एक पद्म भूषण से सम्मानित डॉ बी एम हेगड़े ने आज से लगभग 2 साल पहले कुछ इन्हीं शब्दों में स्वाइन फ्लू का भंडाफोड़ किया था. डा हेगड़े भारत के बड़े मेडिकल साइंटिस्टों में से एक हैं और उन्हें मेडिकल की फील्ड में उनके काम के दौरान तमाम डिगरियां और पुरस्कार मिल चुके हैं. तो क्या हम यह मान लें कि 'स्वाइन फ्लू' वाकई में एक बनाई गई बीमारी है. इसको समझने के लिए पहले हमें यह समझना जरूरी है कि आखिर 'स्वाइन फ्लू' है क्या.

फ्लू या स्वाइन फ्लू

हमारे आसपास ऐसे अनगिनत नॉन लीविंग जीव हैं, जिन्हें हम वायरस कहते हैं, और इन्हीं वायरस से शरीर में तरह-तरह की बीमारियां पैदा होती हैं. अभी जिस 'स्वाइन फ्लू' को लेकर दुनिया भर में अफरातफरी का आलम है, उसके वायरस शरीर में या उसकी सेल में घुसने के लिए अपनी प्रोटीन का इस्तेमाल करते हैं. इसे ही हम H1 कहते हैं. यह वायरस किसी भी शरीर में घुसने के बाद जीवित हो जाता है और बॉडी के अंदर ही दिन-दूना रात-चौगुना बढ़ने लगता है और फिर धीरे-धीरे पूरे शरीर में फैल जाता है.

सेल के अंदर एंट्री करने के बाद यह वायरस, बॉडी के सेल के Nucleus के अंदर RNA (Ribonucleic acid) का इस्तेमाल करता है और अपने आप की बहुत सारी 'कॉपी' पैदा करता है. पूरे शरीर में फैलने के लिए फिर इस वायरस को बाहर आना होता है, जिससे कि यह शरीर के दूसरे सेल में घुसकर इसी प्रक्रिया को अपना कर धीरे-धीरे पूरे शरीर में फैल सकें. सेल से बाहर आने में इनकी मदद करता है N1. जो वायरस जिस की मदद लेता है, उसे वही नाम दे दिया जाता है, जैसे कि 'स्वाइन फ्लू' वायरस के मामले में उसे H1N1 का नाम दे दिया गया.

पर इनसानी शरीर के मामले में एक खास बात है. जब भी कोई वायरस इनसान के शरीर में घुसता है, तो बॉडी तुरंत उसे पहचान जाती है और समझ जाती है कि यह वायरस शरीर को नुकसान पहुंचाएगा. वायरस के शरीर में घुसते ही शरीर दिमाग को मेसेज भेजता है. और दिमाग अपने टूल 'फीवर' का इस्तेमाल करता है. ब्रेन बॉडी का टेंपरेचर बढ़ा देता है और हाई टेंपरेचर से वायरस इनएक्टिव हो जाता है. दूसरे शब्दों में बुखार कोई बीमारी नहीं है. यह शरीर का मैकेनिजम है, जिससे वह शरीर में घुसे वायरस को मार सके. और शरीर ऐसा हर तरह के 'फ्लू' से बचाव के लिए करता है.

जाहिर है किसी भी बीमारी को पहचानने के लिए डॉक्टर आपको टेस्ट कराने की सलाह देते हैं. 'स्वाइन फ्लू' को पहचानने के लिए, जो टेस्ट किया जाता है, उसे कहते हैं पीसीआर टेस्ट (Polymerase chain reaction). क्या यह टेस्ट आपको वाकई बताता है कि आप के शरीर में हो रहा फ्लू 'स्वाइन फ्लू' ही है.

पीसीआर एक ऐसा टेस्ट है, जो वायरस के जेनेटिक सीक्वेंस के बारे में बताता है, न कि किसी विशेष वायरस के बारे में. जेनेटिक सीक्वेंस को साधारण शब्दों में समझाया जाए, तो हम 'बिन लादेन' का उदाहरण ले सकते हैं. अगर हम से कहा जाए कि बिन लादेन चाहे कहीं भी छिपा हो, उसे दूरबीन की मदद से ढूंढा जा सकता था, तो क्या यह संभव होता? दूरबीन, तो केवल दूर से देखने का एक यंत्र है. यह केवल बिन लादेन की दाढ़ी की तरफ ही इशारा करती और बता देती कि यह बिन लादेन हो सकता है. नतीजा यह निकलता कि संसार में जितने भी दाढ़ी वाले लोग हैं, उन सबको बिन लादेन करार दिया जाता. अगर हम स्टेटिक्स की बात करें, तो हर 14 चौदह में से 1 एक व्यक्ति बिन लादेन होगा. ऐसे ही अगर हम पीसीआर टेस्ट की बात करें, तो हर 14 में से 1 व्यक्ति को स्वाइन फ्लू होगा.

जानकारों की राय

2009 में स्वाइन फ्लू घोटाले में एक बड़ा खुलासा हुआ. CDC (सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल), जिसका काम अमेरिका में स्वाइन फ्लू के मामलों की गिनती रखना था, उसने स्वाइन फ्लू के मामलों को गिनना बंद कर दिया. क्योंकि लैब से वापस आ रहे सैंपल्स से पता चल रहा था कि उन मरीजों में स्वाइन फ्लू नहीं था. लोगों में डर फैलाकर CDC अमेरिका में 'स्वाइन फ्लू' वैक्सीन लेने के लिए उन्हें मजबूर कर रही थी.

- शेरल अट्टिक्सन, सीबीएस न्यूज की जर्नलिस्ट

परिणाम के मुताबिक पीसीआर टेस्ट एक विरोधाभास है. पीसीआर गुणात्मक मूल की पहचान करता है, लेकिन संख्या के आकलन के लिए अनुपयुक्त है. इस टेस्ट से सभी स्वतंत्र, संक्रामक वायरस का पता नहीं लगा सकते हैं. यह टेस्ट वायरस के जेनेटिक सीक्वेंस के बारे में बताता है न कि किसी विशेष वायरस के बारे में.

- डॉ कैरी मुल्लिस, इन्वेन्टर, पीसीआर टेस्ट (पीसीआर टेस्ट के आविष्कार के लिए उन्हें 1993 में नोबेल पुरस्कार मिला था)

पीसीआर एक बहुत ही अविश्वसनीय टेस्ट है. छोटे सैंपल से इस वायरस का पता नहीं लगाया जा सकता. यह सैंपल वायरस का हिस्सा हो भी सकता है और नहीं भी. जिस वायरस की वजह से बीमारी है, उसका बॉडी में बहुत बड़ी मात्रा में एक्टिव होना जरूरी है. गलतियां की जा सकती हैं. एक छोटे वायरल से यह बिलकुल साबित नहीं होता कि व्यक्ति बीमार था, है, या होगा.

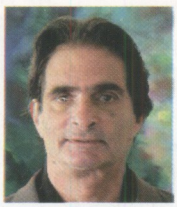

- जॉन रेपर्ट, इन्वेस्टिगेटिव हेल्थ जर्नलिस्ट

स्वाइन फ्लू की चपेट में आने से हर कोई डर रहा है, जबकि इस बीमारी को प्रूव करने के लिए जो टेस्ट है, उसकी प्रमाणिकता ही 50% से कम है. फिर इतने महंगे टेस्ट के पॉजिटिव पाए जाने वाले मरीज भारत में बड़ी संख्या में हैं. 10 अप्रैल, 2014 को ब्रिटिश मेडिकल जर्नल ने टेमिफ्लू के बुरे परिणामों के बारे में पब्लिश किया, लेकिन इस खबर को दबा दिया गया. इसके बाद कंपनी स्पॉन्सर्ड आर्टिकल में टेमिफ्लू के फायदे और पॉजिटिव इफेक्ट के बारे में बताया गया. बहुत सी रिसर्च, डाटा कभी पब्लिश नहीं हुए, और इस दवा का बिना किसी ठोस आधार के खरीदना और स्टॉक करना चलता रहा.

- डॉ बी एम हेगड़े, साइंटिस्ट

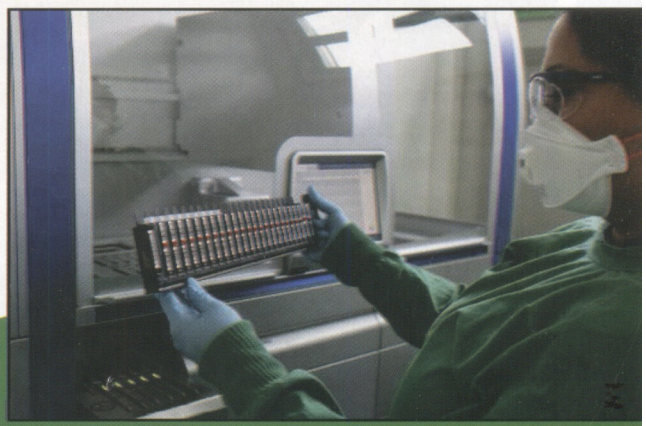

पीसीआर एक बहुत ही अविश्वसनीय टेस्ट है.

- जॉन रेपर्ट, इन्वेस्टिगेटिव हेल्थ जर्नलिस्ट

पूरी दुनिया में स्वाइन फ्लू के घोटाले को पहली बार एक्सपोज करने वाले जो इन्वेस्टिगेटिव जर्नलिस्ट थे, उनका नाम है शेरल अट्टिक्सन और जॉन रेपर्ट. इनमें से जॉन रेपर्ट से विशेष इंटरव्यू के दौरान डॉ बिस्वरूप रॉय चौधरी की बातचीत कुछ इस प्रकार हुई :

डॉ बिस्वरूपः आजकल भारत में स्वाइन फ्लू का भय फिर से लौट आया है. आप इस पर कुछ कहना चाहेंगे?

जॉन रेपर्टः मेरा कहना यह है कि स्वाइन फ्लू पर तब तक विश्वास न करें, जब तक कि आप के पास उस पर विश्वास करने की खास वजह न हो. स्वाइन फ्लू की अफवाह फैलाने वालों को यह सिद्ध करने दीजिए कि यह स्वाइन फ्लू ही है. पीसीआर टेस्ट कितना भरोसेमंद है, इस पर भी सवाल उठाएं. सवाल करें कि पीसीआर टेस्ट क्या वाकई में स्वाइन फ्लू का पता लगा सकता है? सिर्फ इसलिए स्वाइन फ्लू पर विश्वास न करें, क्योंकि आप के आसपास सभी स्वाइन फ्लू - स्वाइन फ्लू कर रहे हैं. भेड़चाल का हिस्सा न बनें. अमेरिका में 2009 का स्वाइन फ्लू पूरी तरह से एक अफवाह थी. उनके पास इसका कोई भी पक्का प्रमाण नहीं है. इस प्रकार मुझे विश्वास है कि भारत में भी स्वाइन फ्लू के कोई पुख्ता सुबूत नहीं हैं.

डरे नहीं - डर कर वैक्सीन न लें. यह दुनिया की जनसंख्या कम करने का तरीका है.

इस तरीके से तकरीबन 15% जनसंख्या घट जाती है. और जब आप लगातार डॉक्टरों, दवा कंपनियों और विश्व स्वास्थ्य संगठन जैसी अथॉरिटी से किसी बीमारी के इलाज के बारे में या वैक्सीन के बारे में सुनते हैं, तो उससे प्रभावित हो कर वही करते हैं, जो ये कंपनियां चाहती हैं. इन डॉक्टरों के पास इतना समय नहीं होता कि वे किसी भी दवा या इलाज के बारे में पूरी तरह छानबीन करें और डाटा के सुबूतों को और शोध या फिर क्लिनिकल ट्रायल्स के रिजल्ट को पढ़ लें. ये डॉक्टर्स बहुत तनाव में काम करते हैं, जहां इन्हें एक टारगेट पूरा करना होता है, जो कि मरीज के रूप में फीस और दवाओं से पूरा किया जाता है. इसमें मीडिया की भी अहम भूमिका है.

दरअसल H1N1 का वायरस भी केवल उतना ही बुरा है, जितना कि सर्दी या अन्य किसी फ्लू का. स्वाइन फ्लू से मरने का खतरा भी उतना ही है, जितना कि जुकाम से. सर्दी, बुखार से भी लोगों की मृत्यु होती है, लेकिन केवल उन्हीं लोंगो की, जिनकी इम्युनिटी पहले से ही बहुत कम होती है. इसलिए स्वाइन फ्लू से बिलकुल न डरें.

खबरों में....

Pandemrix को स्वाइन फ्लू की वैक्सीन के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है, पर यह अब 20 साल के कम उम्र वालों के लिए प्रतिबंधित हो गई है. स्वाइन फ्लू की वैक्सीन का प्रयोग करने से जो मरीज ब्रेन हैमरैज से सफर कर रहे हैं, उन्हें ब्रिटेन सरकार एक बड़ी रकम का भुगतान कर रही है. पीड़ितों के वकील पीटर टोड का कहना है कि इस तरह के मामले पहले कभी नहीं रहे हैं. वैक्सीन के मरीज इन्क्योरेबल हो जाते हैं और उन्हें अच्छे इलाज की जरूरत होती है. 2009 में स्वाइन फ्लू फैलने के बाद वहां लगभग 60 लाख लोगों ने वैक्सीन लिया था, इन में ज्यादातर बच्चे थे. बहुत बड़ी संख्या में रोगी प्रभावित हैं, जिनमें से 80% बच्चे हैं. वहां स्कूल के समय एंटी narcolepsy ड्रग दी जाती है, जिसकी सालाना कीमत 15,000 £ (लगभग ₹13,80,000) है.

ऐसे ड्रग लेने वालों में 8 साल का बच्चा Josh Hadfield भी है. Josh Hadfield की मां खुद को दोषी महसूस करती हैं और कहती हैं कि काश मैं ने अपने बच्चे को ये वैक्सीन नहीं दी होती.

Narcolepsy आदमी की स्लीपिंग साइकिल पर असर डालती है, जिससे आदमी 90 मिनट से अधिक समय तक सो ही नहीं पाता. नींद पूरी न होने की वजह से बहुत बार वह बेहोश हो जाते हैं और हालात ऐसे हो जाते हैं कि मानसिक बीमारी के शिकार बन जाते हैं.

- इंटरनेशनल बिजनेस टाइम्स, मार्च, 2, 2014

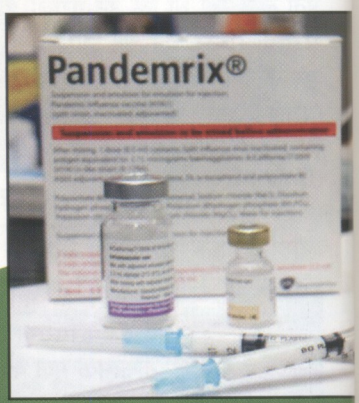

स्वाइन फ्लू सदी का सबसे बड़ा स्कैंडल है. जिसे वर्ल्ड हेल्थ आर्गनाइजेशन और बड़ी फार्मा कंपनी ने बनाया है.-डॉ वोल्फगंग वोदर्ग

डा वोल्फगंग वोदर्ग के ये दावे उन बड़ी फार्म कंपनी के लिए घातक हो सकते हैं, जिनका प्रॉफिट WHO के 2009 में स्वाइन फ्लू को महामारी घोषित करने के बाद बढ़ चुका है. ग्लक्सोस्मिथ कलाइन अकेले 2009 की चौथी तिमाही में H1N1 वैक्सीन की बिक्री से लगभग $1.7 बिलियन कमा चुकी है.

- द वीक, 11 जनवरी, 2010

फिनिश अधिकारियों के मुताबिक स्वाइन फ्लू वैक्सीन Pandemrix लेने वाले 4 से 19 साल की उम्र के लोगों को narcolepsy का खतरा नौ गुना बढ़ गया है. WHO की ग्लोबल एडवाइजरी कमेटी ने वैक्सीन की सेफ्टी के बारे में कहा कि वो फिनिश अधिकारियों की इस बात से सहमत हैं कि स्वाइन फ्लू वैक्सीन और narcolepsy के केसों में गहरा संबंध है.

- द एसोसिएटेड प्रेस, फरवरी, 8, 2011

टेमिफ्लू एक टॉक्सिक दवा है, जो बहुत हानिकारक है और इसे लेने के बाद गंभीर परिणाम सामने आ सकते हैं.

साइंटिस्ट डॉ लियोनार्ड जी होरोविट्ज, जो पब्लिक हेल्थ एंड इर्मिजंग डिजीज पर काम कर रहे हैं, और वैक्सीन से जुड़े कई घोटालों का खुलासा कर चुके हैं, से स्काइप पर डॉ बिस्वरूप ने स्वाइन फ्लू, उसके टेस्ट, मेडिसिन और वैक्सीन के बारे में जानने के लिए बातचीत की. उनकी बातचीत के अंशः

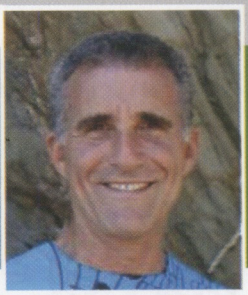

डॉ लियोनार्ड जी होरोविट्ज

- **डॉ बिस्वरूपः स्वाइन फ्लू का पता लगाने के लिए पीसीआर टेस्ट कितना भरोसेमंद है?**
- डॉ होरोविट्जः पीसीआर टेस्ट एक बहुत ही कमजोर टेस्ट है! इस टेस्ट की सेंसटिविटी फ्लू की जांच करने की दिशा में बहुत ही कमजोर है.
- **डॉ बिस्वरूपः डॉ होरोविट्ज, मेरे एक मित्र की मृत्यु की वजह H1N1 पॉजिटिव बताया गया है. डॉ ने स्वाइन फ्लू टेस्ट कर उन्हें रिपोर्ट आने से पहले ही टेमिफ्लू दे दिया, मेरे विचार से उनकी मृत्यु H1N1 से नहीं बल्कि टेमिफ्लू की टॉक्सिटी के कारण हुई. इस बात पर आपका क्या कहना है?**

(फरीदाबाद के योगेश शर्मा की कुछ समय पहले मृत्यु हो गई. उन्हें पेट दर्द, उलटी और सांस लेने में तकलीफ की वजह से फरीदाबाद के नामी हॉस्पिटल में भर्ती करवाया गया था, जहां उन्हें निमोनिया बताया गया और स्वाइन फ्लू टेस्ट पीसीआर भी करवा दिया गया. पीसीआर टेस्ट की रिपोर्ट आए बिना ही कि उन्हें स्वाइन फ्लू की दवा टेमिफ्लू दे दी गई और तीन दिन बाद ही उनकी मृत्यु हो गई और उनकी मृत्यु की वजह H1N1 पॉजिटिव होना लिखा गया.)

- डॉ. होरोविट्जः मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूं. अगर आप टेमिफ्लू के बारे में पता करें, तो पाएंगे कि इसके पीछे भी एक बहुत बड़ा घोटाला है. टेमिफ्लू एक टॉक्सिक दवा है, जो बहुत हानिकारक है और इसे लेने के बाद गंभीर परिणाम सामने आ सकते हैं, जैसा आपके मित्र के केस में हुआ. टेमिफ्लू की टॉक्सिसिटी के बारे में सबसे बड़ी स्वास्थ्य अथॉरिटी कोक्रेन और बीएमजे (ब्रिटिश मेडिकल जर्नल) की एक जॉइंट रिपोर्ट में कहा गया कि रिसर्च के मुताबिक टेमिफ्लू शरीर में एंटीबॉडीज बनने से रोकता है, जिससे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है. यह रिपोर्ट 10 अप्रैल 2014 को रिलीज की गई थी, जिससे लोगों को टेमिफ्लू के बारे में आगाह किया जा सके.
- **डॉ बिस्वरूपः इन सबके पीछे क्या मकसद है, ये सब हमारे समाज में क्यों चल रहा है?**
- डॉ. होरोविट्ज : इसे साइंटिफिक भाषा में एट्रोजेनिसाइड (iatrogenocide) कहते हैं, जिसका मतलब है 'मास मर्डर'.... और सरल भाषा में इसका मतलब है लोगों को डॉक्टरों की मदद से मौत देना.
- **डॉ बिस्वरूपः भारत में H1N1 से बचने के लिए वैक्सीन लगाई जा रही है, इसके बारे में आपका क्या कहना है?**
- डॉ. होरोविट्जः बड़ी-बड़ी दवा की कंपनिया डॉक्टर्स का इस्तेमाल करती हैं लोगों को कंट्रोल (enslave) करने के लिए. और यह वैक्सीन के द्वारा किया जाता है.
- **डॉ बिस्वरूपः फ्लू अगर सचमुच में ही स्वाइन फ्लू हो, तो हमें क्या करना चाहिए? ऐसा क्यों है कि अगर स्वाइन फ्लू या इबोला के मरीज का इलाज दूसरे देशों में करते हैं, तो भी ज्यादातर लोगों की मृत्यु हो जाती है. लेकिन जब उसी मरीज का इलाज अमेरिका में ले जाकर किया जाता है, तो 3 दिन के अंदर ही मरीज ठीक हो जाता है. ऐसा क्यों है? इसके पीछे क्या वजह है?**
- डॉ होरोविट्जः जो दवाइयां मरीज को ट्रीट करने के लिए ऑन साईट दी जाती हैं, वह एक्सपेरिमेंटल (experimental drugs) होती हैं. लेकिन जो इलाज अमेरिका में किया जाता है, वह है अल्कलाइजिंग योर बॉडी (Alakalising your body). यानी शरीर के अंदर से टॉक्सिंस को बाहर निकालना.
- **डॉ बिस्वरूपः और यह हम भारत में कैसे कर सकते हैं?**
- डॉ होरोविट्जः डाइट प्लान से और नियमित दिनचर्या से. इस डाईट प्लान को फॉलो करने से शरीर में किसी भी प्रकार का वायरस या बैक्टीरिया ग्रो नहीं कर सकता. और अगर करता भी है, तो आपके शरीर में इतनी इम्युनिटी बढ़ जाती है कि शरीर उसे मारकर बाहर फेंकने में सशक्त हो जाता है.

स्वाइन फ्लू को ऐसे करें दूर...

- रिफाइंड चीनी और नमकः 0%
- नॉनवेज, दूध और अंडाः 0%
- कुक्ड फूडः 0%
- प्रोसेस्ड फूडः 0%
- फलः 35-40%
- कच्ची / स्टीमड सब्जियांः 50% से ज्यादा
- व्यायाम : हर दिन 1000 स्टेप से ज्यादा
- सनशाइनः रोजाना 30 मिनट

पहले भी खेला जा चुका है ऐसा खेल

ऐसा कुछ पहली बार नहीं हो रहा है, अपने फायदे के लिए अमेरिका पहले भी ऐसा कई बार कर चुका है. लोगों की जिंदगियों से खेलना उसके लिए सिर्फ एक बिजनेस का हिस्सा है और कुछ नहीं.

गुएटेमाला सिफिलिस एक्सपेरिमेंट

यह एक्सपेरिमेंट 1946-1948 के बीच गुएटेमाला में किया गया था, जिसे यूएस पब्लिक हेल्थ सर्विस के डॉ जॉन चार्ल्स कट्लर ने लीड किया था और यूएस नेशनल इंस्टिट्युट ऑफ हेल्थ (US NIH) और पैन अमेरिकन ने स्पॉन्सर किया था. इसमें लोकल रेजिडेंट्स को सिफिलिस से इन्फेक्ट किया गया, जिससे पेनिसिलिन एंटीबायोटिक के प्रभाव के बारे में अध्ययन किया जा सके. कई लोग सिफलिस के इन्फेक्शन से मारे गए और कई लोग एंटीबायोटिक के हार्मफुल इफेक्ट से. हालांकि 2010 में अमेरिका की तमाम बड़ी शख्सीयतों ने इस अमानवीय शोध के लिए माफी मांग ली!

1 अक्टूबर, 2010 को वाशिंगटन पोस्ट ने सेक्रेटरी ऑफ स्टेट हिलेरी क्लिंटन और सेक्रेटरी ऑफ हेल्थ एंड 'मन सर्विसेस कैथलीन सेबेलिअस के संयुक्त बयान को कुछ यों छापा था, 'हालांकि इस घटना को 64 साल से ज्यादा हो गए हैं, पर हम पब्लिक हेल्थ की कीमत पर किए गए ऐसे रिसर्च की निंदा करते हैं. हमें अफसोस है कि ऐसा हुआ और हम उन सभी लोगों से माफी मांगते हैं, जो ऐसे घिनौने रिसर्च प्रैक्टिस से प्रभावित हुए.'

अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा ने गुएटेमाला के प्रेसिडेंट अल्वारो कोलोम से व्यक्तिगत रूप से फोन कर माफी मांगी थी. व्हाइट हाउस के प्रवक्ता रॉबर्ट गिब ने बताया, प्रेसिडेंट ने कहा, यह चौंकाने वाला है. दुखद है, और बहुत ही घिनौना है.

गुएटेमाला सिफिलिस एक्सपेरिमेंट के पीड़ित

वियतनाम युद्ध के दौरान अमेरीका द्वारा इस्तेमाल किया गया एजेंट ऑरेंज एक पावरफुल कैमिकल है जिसका प्रयोग वियतनाम के लोगों के लिए और जंगल को खत्म करने के लिए किया गया था.

वियतनाम में एजेंट ऑरेंज

वियतनाम- यूएस युद्ध के दौरान वियतनामी सेना को हराने मे काफी दिक्कते आ रही थीं, क्योंकि वियतनाम के घने जंगल अमेरिकी सैनिकों के लिए किसी चैलेंज से कम नहीं थे. इससे निबटने के लिए अमेरिका ने ऑपरेशन रैंच हैंड लांच किया, जो 1961 से 1971 तक चला. एजेंट ऑरेंज जो कि पौधों पर छिड़का जाने वाला एक हर्बिसाइड है, उसके जहरीले पदार्थों को दोगुना कर दिया गया, जिससे जंगलों को नष्ट किया जा सके. यूएस एयरफोर्स ने विमान से इसका छिड़काव किया. 4 मिलियन लोग इससे प्रभावित हुए और अभी तक इसके भयंकर परिणाम सामने आ रहे हैं. बच्चों में मानसिक रोग. त्वचा का रंग संतरी हो जाना, हृदय रोग, किडनी की बीमारी जैसी कई जन्मजात बीमारियां शामिल हैं.

एजेंट ऑरेंज के पीड़ित

डॉ बिस्वरूप ने वियतनाम के डॉ जियांग फुआंग तुआन से 'एजेंट ऑरेंज' के बारे में बात की. डॉ तुआन के परिवार की पिछली 16 पीढ़ियां मेडिकल फील्ड में ही काम कर रही हैं.

डॉ जियांग फुआंग तुआन

एजेंट ऑरेंज का निर्माण मोनसेंटो, डाउ केमिकल्स, यूनीरॉयल, हर्कुलस, डायमंड शैमरॉक, थॉम्पसन केमिकल और TH एग्रीकल्चर ने किया था. मोनसेंटो इसका मुख्य सप्लायर था. 'एजेंट ऑरेंज' लॉन्च होने के तुरंत बाद ही कर्मचारियों को स्किन प्रॉब्लम, शरीर और जोड़ों में दर्द, कमजोरी, घबराहट, इम्पोटेंसी की समस्या शुरू हो गई. तथ्यों से पता चलता है कि मोनसेंटो इन परिणामों के बारे में जानता था, लेकिन इसे गोपनीय रखा गया. वियतनाम के 6 मिलियन एकर में 19 मिलियन एकर एजेंट ऑरेंज का छिड़काव किया गया. यह वियतनाम का अस्तित्व मिटाने की कोशिश थी. वियतनाम सरकार के मुताबिक 3 मिलियन लोग इससे प्रभावित हुए और 8,00,000 सीरियस बीमारी के शिकार हुए. हालांकि मोनसेंटो अभी भी यही कहता है कि इतनी बड़ी समस्या का जिम्मेदार वो नहीं है. लेकिन 1990 में आई एक रिपोर्ट के अनुसार मोनसेंटो ने खुद को सही साबित करने के लिए जो स्टडी कराई थी, उसके रिजल्ट मैनिपुलेट किए गए थे और ऐसे ही रिजल्ट बार-बार सामने आते थे कि 'एजेंट ऑरेंज' और लोगों की बिगड़ती हेल्थ के बीच कोई संबंध नहीं है. पर इस नुकसान की भरपाई के लिए अमेरिका इस के पीड़ितों को अब तक भुगतान कर रहा है.

- न्यू इंडिया रिपोर्ट

वियतनाम युद्ध के दौरान अमेरीका द्वारा इस्तेमाल किया गया एजेंट ऑरेंज एक पावरफुल कैमिकल है जिसका प्रयोग वियतनाम के लोगों के लिए और जंगल को खत्म करने के लिए किया गया था.

वियतनाम में एजेंट ऑरेंज

वियतनाम- यूएस युद्ध के दौरान वियतनामी सेना को हराने मे काफी दिक्कते आ रही थीं, क्योंकि वियतनाम के घने जंगल अमेरिकी सैनिकों के लिए किसी चैलेंज से कम नहीं थे. इससे निबटने के लिए अमेरिका ने ऑपरेशन रैंच हैंड लांच किया, जो 1961 से 1971 तक चला. एजेंट ऑरेंज जो कि पौधों पर छिड़का जाने वाला एक हर्बिसाइड है, उसके जहरीले पदार्थों को दोगुना कर दिया गया, जिससे जंगलों को नष्ट किया जा सके. यूएस एयरफोर्स ने विमान से इसका छिड़काव किया. 4 मिलियन लोग इससे प्रभावित हुए और अभी तक इसके भयंकर परिणाम सामने आ रहे हैं. बच्चों में मानसिक रोग. त्वचा का रंग संतरी हो जाना, हृदय रोग, किडनी की बीमारी जैसी कई जन्मजात बीमारियां शामिल हैं.

एजेंट ऑरेंज के पीड़ित

डॉ बिस्वरूप ने वियतनाम के डॉ जियांग फुआंग तुआन से 'एजेंट ऑरेंज' के बारे में बात की. डॉ तुआन के परिवार की पिछली 16 पीढ़ियां मेडिकल फील्ड में ही काम कर रही हैं.

डॉ जियांग फुआंग तुआन

एजेंट ऑरेंज का निर्माण मोनसेंटो, डाउ केमिकल्स, यूनीरॉयल, हर्कुलस, डायमंड शैमरॉक, थॉम्पसन केमिकल और TH एग्रीकल्चर ने किया था. मोनसेंटो इसका मुख्य सप्लायर था. 'एजेंट ऑरेंज' लॉन्च होने के तुरंत बाद ही कर्मचारियों को स्किन प्रॉब्लम, शरीर और जोड़ों में दर्द, कमजोरी, घबराहट, इम्पोटेंसी की समस्या शुरू हो गई. तथ्यों से पता चलता है कि मोनसेंटो इन परिणामों के बारे में जानता था, लेकिन इसे गोपनीय रखा गया. वियतनाम के 6 मिलियन एकर में 19 मिलियन एकर एजेंट ऑरेंज का छिड़काव किया गया. यह वियतनाम का अस्तित्व मिटाने की कोशिश थी. वियतनाम सरकार के मुताबिक 3 मिलियन लोग इससे प्रभावित हुए और 8,00,000 सीरियस बीमारी के शिकार हुए. हालांकि मोनसेंटो अभी भी यही कहता है कि इतनी बड़ी समस्या का जिम्मेदार वो नहीं है. लेकिन 1990 में आई एक रिपोर्ट के अनुसार मोनसेंटो ने खुद को सही साबित करने के लिए जो स्टडी कराई थी, उसके रिजल्ट मैनिपुलेट किए गए थे और ऐसे ही रिजल्ट बार-बार सामने आते थे कि 'एजेंट ऑरेंज' और लोगों की बिगड़ती हेल्थ के बीच कोई संबंध नहीं है. पर इस नुकसान की भरपाई के लिए अमेरिका इस के पीड़ितों को अब तक भुगतान कर रहा है.

- न्यू इंडिया रिपोर्ट